



# उच्च शिक्षा में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की लड़कियों की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. रामकिशोर विश्वकर्मा<sup>1\*</sup>

1. एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, ज्ञानवीर विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश, भारत  
ramkishorvishwakarma565@gmail.com

**सारांश:** यह अध्ययन उच्च शिक्षा में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की लड़कियों की शैक्षणिक उपलब्धियों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य दोनों वर्गों की छात्राओं के शैक्षणिक प्रदर्शन, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और संसाधनों की उपलब्धता में अंतर को समझना है। शोध के लिए सागर (मध्यप्रदेश) क्षेत्र को चुना गया और प्रतिभागियों के रूप में डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश) की 150 छात्राओं (75 अनुसूचित जाति एवं 75 अनुसूचित जनजाति) का चयन किया गया। डेटा संग्रहण के लिए प्रश्नावली, साक्षात्कार और दस्तावेज विश्लेषण का उपयोग किया गया। परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि अनुसूचित जाति की लड़कियाँ अनुसूचित जनजाति की लड़कियों की तुलना में उच्चतर शैक्षणिक प्रदर्शन कर रही हैं, जिसमें सामाजिक-आर्थिक कारकों, पारिवारिक सहयोग और शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता की महत्वपूर्ण भूमिका है।

**मुख्य शब्द:** अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, उच्च शिक्षा, शैक्षणिक उपलब्धि, तुलनात्मक अध्ययन

----- X -----

## परिचय

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक और आर्थिक प्रगति का आधार मानी जाती है। विशेष रूप से उच्च शिक्षा न केवल व्यक्तिगत विकास का माध्यम है, बल्कि समाज में समानता, न्याय और सशक्तिकरण को भी बढ़ावा देती है। भारतीय समाज में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदाय लंबे समय तक शैक्षणिक और सामाजिक अवसरों से वंचित रहे हैं। हालाँकि स्वतंत्रता के बाद शिक्षा को सबके लिए सुलभ बनाने हेतु कई नीतिगत प्रयास किए गए, जैसे आरक्षण नीति, छात्रवृत्तियाँ और विशेष शैक्षणिक योजनाएँ, फिर भी इन समुदायों की लड़कियाँ उच्च शिक्षा में अपेक्षित प्रगति नहीं कर सकीं।

गांधीजी के अनुसार: - "यह सच है कि वे जीवन में समान हैं, लेकिन उनके कार्य भिन्न हैं। घर पर शासन करना महिला का अधिकार है। पुरुष इसके बाहर मालिक है।" 'हरिजन' में गांधीजी ने लिखा - "महिलाओं की निरक्षरता का एक और स्पष्ट कारण हीनता की स्थिति है, जिसे एक अनादि परंपरा ने अन्यायपूर्ण तरीके से उन पर थोप दिया है। पुरुष ने उन्हें अपनी सहेली और अर्धांगिनी के बजाय एक घरेलू कामगार और अपने आनंद का साधन बना दिया है। इसका परिणाम हमारे समाज का अर्ध-पक्षाघात है।" स्वामी विवेकानंद, टैगोर और सभी अन्य स्वदेशी विचारकों ने राष्ट्र के उत्थान के लिए महिलाओं की शिक्षा पर जोर दिया है। 1947 में स्वतंत्रता के समय, भारत ने अनुसूचित जाति के सदस्यों सहित अपने वंचित समूहों के सामाजिक और आर्थिक कल्याण में सुधार के उद्देश्य से नीतियाँ बनाने का संकल्प लिया यदि सामान्य शिक्षा को पुरुषों या महिलाओं तक सीमित रखना है, तो यह अवसर महिलाओं को दिया जाना चाहिए, क्योंकि तब यह निश्चित रूप से अगली पीढ़ी को दिया जाएगा। शिक्षा को कल्याण के लिए मौलिक मानते हुए, भारत की 1968 और 1986 की शिक्षा नीतियों में कहा गया है कि सरकार को 14 वर्ष की आयु तक के सभी लड़कों और लड़कियों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा देने के लिए "कड़ी मेहनत" करनी चाहिए (भारत सरकार, 1986)। शिक्षा को राष्ट्रीय विकास प्रयास के महत्वपूर्ण तत्वों में से एक माना जाता है और विशेष रूप से प्रारंभिक शिक्षा राष्ट्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह 21वीं सदी के ज्ञान-आधारित समाज के निर्माण के लिए शक्तिशाली उपकरण है। बेशक, इस बात पर तीखी बहस होती है कि क्या ऐसी नीति होनी चाहिए, मानदंड क्या होने चाहिए और इसे वास्तव में कैसे लागू किया जाना चाहिए, लेकिन हिंसा की कठोरता दीर्घकालिक जाति संघर्ष से जुड़ी हुई है, जो हाल ही में "पहचान नीतियों" और सामान्य सामाजिक परिवर्तनों में वृद्धि से और बढ़ गई है। उच्च जाति के भारतीय इस नीति से वंचित और भेदभाव महसूस करते हैं, भारतीय संविधान में उल्लिखित है, अनुसूचित जातियों को सरकारी और प्राथमिक शिक्षा में स्थान देने का अधिकार संविधान न केवल महिलाओं को समानता प्रदान करता है, बल्कि राज्य को महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक भेदभाव के उपाय अपनाने का अधिकार भी देता है। इस परिप्रेक्ष्य में यानी अनुसूचित जाति की महिलाओं के उत्थान के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 5 अप्रैल, 2019 को स्टैंड-अप इंडिया योजना और इस योजना के लिए वेब पोर्टल लॉन्च किया है, जिसके तहत बैंक अनुसूचित जाति और महिला उद्यमियों को 1 करोड़ रुपये तक का लोन देंगे।

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की लड़कियाँ आज भी सामाजिक भेदभाव, आर्थिक असुरक्षा, पारिवारिक प्रतिबंधों और संस्थागत सीमाओं जैसी कई चुनौतियों का सामना कर रही हैं। उच्च शिक्षा में इनकी भागीदारी और उपलब्धियाँ न केवल उनकी व्यक्तिगत उन्नति को दर्शाती हैं, बल्कि

सामाजिक समावेशन और समतामूलक विकास के संकेतक भी हैं।

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के उच्च शिक्षा में शैक्षणिक प्रदर्शन का तुलनात्मक मूल्यांकन करना है। साथ ही, यह विश्लेषण करना भी महत्वपूर्ण है कि किन सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक कारकों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों पर प्रभाव पड़ता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष समाज के इन वंचित वर्गों के लिए प्रभावी नीतियाँ बनाने और समावेशी शिक्षा तंत्र को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

## साहित्य समीक्षा

जय प्रभाकर एस.सी. (2021) भारत में जाति आधारित असमानताएं लंबे समय से मौजूद हैं। बहिष्कार और भेदभाव के मुद्दे भारतीय संदर्भ में विशेष महत्व रखते हैं, जहां अनुसूचित जाति (एससी) भारतीय आबादी का 16.2% हिस्सा है, जो पारंपरिक रूप से सामाजिक बहिष्कार से पीड़ित है। पिछले दो दशकों में सामाजिक बुराइयों और उत्पीड़न की समस्या कम हो रही है। हालांकि, एससी के विकास के लिए आरक्षण एक आवश्यक तंत्र है। भारत में विशेष रूप से एससी लड़कियों के लिए उच्च शिक्षा में लैंगिक पूर्वाग्रह भी एक बड़ी बाधा है। विभिन्न साहित्य में तर्क दिया गया है कि एससी पहुंच, सामर्थ्य, प्राप्ति, बहिष्कार, सामाजिक-मनोवैज्ञानिक कारकों, निजीकरण के प्रभुत्व आदि से जुड़े विभिन्न कारकों के कारण इष्टतम स्तर पर उच्च शिक्षा प्राप्त करने से वंचित हैं। आजादी के 69 साल बाद भी, अनुसूचित जातियों को दूसरों के बराबर समान दर्जा प्राप्त करने का दावा नहीं किया जाता है। वर्तमान अध्ययन ने कर्नाटक में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए एससी की पहुंच, प्राप्ति और सामाजिक मुद्दों को समझने का प्रयास किया।

दिलीप कुमार (2021) शिक्षा को प्रगति और सामाजिक परिवर्तन के लिए एक आवश्यक उपकरण माना जाता है। शिक्षा के माध्यम से, व्यक्ति सभी की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में सुधार करके महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी बदलाव हासिल करने में सक्षम होंगे। भारत में, मौजूदा जाति व्यवस्था और पदानुक्रमित समाज की शैक्षिक अवसरों तक पहुंच असमान और अनुचित है, इसलिए वर्तमान अध्ययन अनुसूचित जाति और उच्च शिक्षा के बारे में है। यह मुख्य रूप से अनुसूचित जाति के उच्च शिक्षा परिदृश्य, अनुसूचित जाति के शैक्षिक विकास के लिए संवैधानिक आवश्यकताओं और अनुसूचित जाति की उच्च शिक्षा स्थिति को प्रभावित करने वाले चर की जांच करता है। यह शोधपत्र इस बात पर जोर देता है कि कैसे जाति उच्च शिक्षा जाति पदानुक्रम के सबसे निचले पायदान पर रहने वालों की धारणा बनाती है और आधुनिक भारत में जाति पर एक अभिनव दृष्टिकोण प्रदान करती है। उसी भेदभाव के समान समानताएँ हैं, खासकर अभिजात वर्ग के संदर्भ में। पूरा शोधपत्र सबसे पहले उच्च शिक्षा में दलित मुख्यधारा से दूर चला गया, न कि संख्या या आरक्षण की नीति पर बल्कि दलित छात्रों के आंतरिक जीवन और संघर्षों पर ध्यान केंद्रित करके। पारंपरिक अछूत प्रथा के आधार पर, अनुसूचित जाति श्रेणियों की जातियों की विशेषता महत्वपूर्ण सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक पिछड़ापन है। संविधान, जो वर्तमान पेर को संबोधित करता है, में अनुसूचित जातियों की शैक्षिक और आर्थिक उन्नति के लिए कुछ प्रावधान हैं। भारत में अनुसूचित जाति के छात्रों के बीच साक्षरता और उच्च शिक्षा नामांकन में सकारात्मक रुझान है, लेकिन सकल नामांकन अनुपात में वृद्धि धीमी है।

नरसिंहमूर्ति (2019) जांच के लिए चुना गया विषय "कर्नाटक में एससी/एसटी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर एक अध्ययन" है। एससी/एसटी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि और सामाजिक आर्थिक स्थिति के बीच महत्वपूर्ण संबंध का पता लगाना। इस अध्ययन में, अन्वेषक ने 'सर्वेक्षण पद्धति' का इस्तेमाल किया। सर्वेक्षण पद्धति डेटा एकत्र करने और उसका विश्लेषण करने की एक विधि है, जो अत्यधिक संरचित और विस्तृत प्रश्नावली के माध्यम से एकत्रित विशिष्ट आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाले बड़ी संख्या में उत्तरदाताओं से प्राप्त होती है। कर्नाटक के बैंगलोर शहरी और ग्रामीण जिलों के माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले समाज कल्याण विभाग द्वारा सुविधाओं का लाभ उठाने वाले अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों की पहचान अध्ययन की जनसंख्या के रूप में की गई है। एक नमूना अवलोकन और विश्लेषण के लिए जनसंख्या का एक छोटा सा हिस्सा है। अन्वेषक ने स्थानीयता पर स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया। अन्वेषक ने बैंगलुरु शहरी और ग्रामीण जिलों में स्थित समाज कल्याण विभाग द्वारा सुविधाओं का लाभ उठाने वाले 100 एससी/एसटी छात्रों का नमूना चुना, जिनमें से 50 लड़के और 50 लड़कियाँ थीं। अन्वेषक ने इलाके पर स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का इस्तेमाल किया। एकत्र किए गए आंकड़ों का विश्लेषण कार्ल पियर्सन के उत्पाद क्षण गुणांक के सहसंबंध और स्वतंत्र 'टी' परीक्षण जैसे उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग करके किया गया था। महत्व का स्तर 0.05 और 0.01 आत्मविश्वास के स्तर पर तय किया गया था। एससी/एसटी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में उनके लिंग के संबंध में महत्वपूर्ण अंतर का पता लगाना। एससी/एसटी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में उनके इलाके के संबंध में महत्वपूर्ण अंतर का पता लगाना।

अनिरुद्ध महतो (2019) प्रेरणा एक आंतरिक आवेग है जो हमें एक कार्य पूरा करने के लिए प्रेरित करता है। प्रेरणा के बिना कोई कार्रवाई नहीं होती है। अध्ययन का उद्देश्य अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति समुदाय के छात्रों के बीच शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा के स्तर का पता लगाना और पुरुलिया जिले में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति समुदाय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंध का पता लगाना है। जांचकर्ताओं ने अकादमिक उपलब्धि प्रेरणा की जांच करने के लिए स्व-निर्मित अकादमिक उपलब्धि प्रेरणा पैमाने को अपनाया और उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों में एससी, एसटी समुदाय के छात्रों के पिछले वर्ष के अंतिम परिणाम एकत्र किए। जांचकर्ताओं ने सहसंबंध का पता लगाने के लिए पियर्सन के सहसंबंध विधि के साथ एकत्रित डेटा का विश्लेषण किया। वर्तमान अध्ययन से पता चला है कि एससी और एसटी समुदाय के छात्रों में अकादमिक उपलब्धि प्रेरणा का मध्यम स्तर है। और पुरुलिया जिले में एससी, एसटी समुदाय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा और

अकादमिक प्रदर्शन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है। और सांख्यिकीय रूप से नहीं, एससी छात्र पुरुलिया जिले में एसटी छात्रों की तुलना में अकादमिक उपलब्धि प्रेरणा में तुलनात्मक रूप से अधिक हैं क्योंकि एससी छात्रों का औसत स्कोर (176.22) एसटी छात्रों के औसत स्कोर (173.26) से अधिक है।

संजुक्ता साहू (2016) लड़कियों की शिक्षा भारत के लिए सामाजिक और आर्थिक रूप से विकसित होने का एक बड़ा अवसर है। शिक्षित लड़कियाँ वे हथियार हैं जो घर और पेशेवर क्षेत्रों में अपने योगदान के माध्यम से भारतीय समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं। वे देश के साथ-साथ समाज में बेहतर अर्थव्यवस्था का कारण हैं। शोधपत्र के उद्देश्य हैं: भारत में लड़कियों की शिक्षा की वर्तमान स्थिति और चुनौतियों का पता लगाना; भारत में लड़कियों की शिक्षा की चुनौतियों को दूर करने के लिए संभावित सुझाव प्रदान करना। इस अध्ययन को करने के लिए अन्वेषक ने विभिन्न प्रकार के लेखों, रिपोर्टों, शोध पत्रों, पुस्तकों, आधिकारिक वेबसाइटों और ऑनलाइन सामग्रियों का उपयोग किया है। शोधपत्र को चार भागों में विभाजित किया गया है। शोधपत्र के पहले भाग में भारत में लड़कियों की शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और महत्व पर प्रकाश डाला गया है। शोधपत्र के दूसरे भाग में भारत में लड़कियों की शिक्षा की वर्तमान स्थिति के बारे में चर्चा की गई है। शोधपत्र के तीसरे भाग में भारत सरकार द्वारा लड़कियों की शिक्षा में सुधार के लिए की गई प्रमुख पहलों और भारत में लड़कियों की शिक्षा की विभिन्न चुनौतियों के बारे में विस्तार से बताया गया है। शोधपत्र के अंतिम भाग में भारत में लड़कियों की शिक्षा की बाधाओं को दूर करने के लिए सुझाव दिए गए हैं। शोधपत्र का निष्कर्ष है कि उच्च शिक्षा की तुलना में प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर लड़कियों की शिक्षा की स्थिति बहुत खराब है। 2012 से 2015 तक प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर लड़कियों के नामांकन दर में कमी आई है, लेकिन 2012 से 2015 तक उच्च शिक्षा स्तर पर लड़कियों के सकल नामांकन अनुपात में वृद्धि हुई है। माता-पिता का रवैया, बुनियादी ढांचे की कमी, सुरक्षा की कमी, लड़कियों से संबंधित अंधविश्वास, माता-पिता की सामाजिक-आर्थिक स्थिति भारत में लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख चुनौतियाँ हैं। यह शोधपत्र सुझाव देता है कि उच्च अधिकारियों, समुदाय के सदस्यों, गैर सरकारी संगठनों और भारत के सभी नागरिकों को हमारे समाज से लड़कियों की शिक्षा से संबंधित विभिन्न बाधाओं को मिटाने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

लॉरेंस (2016) अभिभावकीय प्रोत्साहन से तात्पर्य अभिभावकों द्वारा पहल करने और बच्चों के व्यवहार को उच्च शैक्षणिक उपलब्धि की ओर निर्देशित करने की सामान्य प्रक्रिया से है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के अभिभावकीय प्रोत्साहन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों की जांच करना है। सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया और जांचकर्ताओं ने स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया। नमूने में तंजावुर जिले के दस स्कूलों के 350 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र शामिल हैं। कुसुम अग्रवाल (1999) द्वारा विकसित अभिभावक प्रोत्साहन स्केल और अन्वेषक (2012) द्वारा निर्मित शैक्षणिक उपलब्धि को उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया गया था। कार्ल पियर्सन के सहसंबंध के उत्पाद क्षण गुणांक का उपयोग डेटा के विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय तकनीक के रूप में किया गया था। डेटा का विश्लेषण करने के लिए सांख्यिकीय तकनीक के रूप में कार्ल पियर्सन के उत्पाद क्षण गुणांक का उपयोग किया गया था।

मोहन लाल (2016) इस संदर्भ में कोई भी अनुसूचित जाति के लिए शिक्षा की आवश्यकता से इनकार नहीं कर सकता है। निरक्षर शोषण के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। इसलिए निरक्षरता हर कीमत पर खत्म होनी चाहिए। आठवीं पंचवर्षीय योजना के निर्माण में अनुसूचित जातियों की शिक्षा पर जोर दिया गया। इसका उद्देश्य अनुसूचित जातियों के समुदायों की आंतरिक शक्ति का निर्माण करना है। ताकि वे नई परिस्थितियों का सामना कर सकें और नए कार्यक्रमों का लाभ उठा सकें। इसलिए शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। सातवीं योजना में छठी योजना में शुरू किए गए सुरक्षात्मक उपायों को समेकित किया गया है। कॉलेज शिक्षा को छात्रों की योग्यता और उनके व्यक्तिगत संसाधनों पर छोड़ दिया जाना चाहिए। शिक्षा की ऐसी योजना से अनुसूचित जातियों के युवाओं को छोटी-मोटी नौकरियों से संबंधित करियर अपनाने में मदद मिलनी चाहिए, जिनकी गांव और तहसील स्तर पर बहुत आवश्यकता है। उच्च शिक्षा, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा को छोड़कर, अनुसूचित जातियों को भ्रष्ट करती है और उन्हें उनके अपने पारंपरिक समाज से बाहर निकाल देती है। यह युवा मीनाओं में बेहतर और उच्च जीवन स्तर प्राप्त करने की इच्छा विकसित करके किया जा सकता है, क्योंकि सुधार या विकास की इच्छा विकास प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समाज के वंचित वर्गों के मामले में, यह देखा गया है कि वे उपलब्धि की कम आवश्यकता, खराब शिक्षा बुद्धि स्तर से पीड़ित हैं। वर्तमान अध्ययन अनुसूचित जातियों के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा और सामान्य बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन है।

## अनुसंधान उद्देश्य

1. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की लड़कियों की शैक्षणिक उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक कारकों की पहचान करना।
3. उच्च शिक्षा में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति दोनों वर्गों की छात्राओं को सशक्त बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

## शोध पद्धति

शोध पद्धति उन विधियों, तकनीकों और प्रक्रियाओं का समूह है जिनके माध्यम से किसी समस्या का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन और विश्लेषण किया

जाता है। यह यह तय करती है कि डेटा किस प्रकार एकत्र किया जाएगा, उसका विश्लेषण कैसे होगा, और निष्कर्ष कैसे निकाले जाएंगे। शोध पद्धति अनुसंधान को एक सुव्यवस्थित, तर्कसंगत और विश्वसनीय दिशा प्रदान करती है। इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया जाएगा। अनुसंधान हेतु उच्च शिक्षा में अध्ययनरत 150 छात्राओं (75 अनुसूचित जाति और 75 अनुसूचित जनजाति) का चयन किया जाएगा। डेटा एकत्रीकरण के लिए प्रश्नावली, शैक्षणिक रिकॉर्ड और अर्ध-संरचित साक्षात्कार का सहारा लिया जाएगा। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीकों जैसे t-test के माध्यम से किया जाएगा।

### अध्ययन क्षेत्र

शोध का क्षेत्र मध्य प्रदेश के सागर जिले को चुना गया। यहाँ स्थित डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) से प्रतिभागियों का चयन किया गया। यह विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित संस्थान है, जहाँ विविध सामाजिक पृष्ठभूमि से छात्राएँ अध्ययन करती हैं।

### नमूना और चयन

शोध हेतु कुल 150 छात्राओं को शामिल किया गया, जिनमें 75 अनुसूचित जाति तथा 75 अनुसूचित जनजाति वर्ग से संबंधित छात्राएँ थीं। नमूना चयन के लिए सरल यादृच्छिक नमूना पद्धति का उपयोग किया गया ताकि निष्पक्ष और प्रतिनिधिक नमूना प्राप्त हो सके।

### डेटा संग्रहण के साधन

डेटा संग्रहण हेतु प्रश्नावली, अर्ध-संरचित साक्षात्कार और दस्तावेज विश्लेषण की विधियों का प्रयोग किया गया। प्रश्नावली में शैक्षणिक प्रदर्शन, पारिवारिक आर्थिक स्थिति और संस्थागत समर्थन से जुड़े प्रश्न शामिल किए गए थे। साक्षात्कार के माध्यम से छात्राओं के व्यक्तिगत अनुभवों को गहराई से समझा गया। मार्कशीट्स और प्रमाणपत्रों के दस्तावेज विश्लेषण द्वारा शैक्षणिक उपलब्धियों का प्रमाणिक मूल्यांकन किया गया।

### डेटा विश्लेषण की विधि

संग्रहित आँकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीकों जैसे औसत, प्रतिशतता तथा टी-परीक्षण के माध्यम से किया गया। गुणात्मक डेटा का विश्लेषण विषयगत विश्लेषण द्वारा किया गया, जिससे विभिन्न सामाजिक और व्यक्तिगत कारकों को समझा जा सका।

## परिणाम एवं चर्चाएँ

### शैक्षणिक उपलब्धियों में तुलनात्मक विश्लेषण

शोध के तहत 150 छात्राओं (75 अनुसूचित जाति और 75 अनुसूचित जनजाति) के शैक्षणिक प्रदर्शन का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। उनकी अंतिम परीक्षा के अंकों का औसत प्रतिशत निकालकर समूहों की तुलना की गई।

तालिका 1: अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के औसत अंक

समूह	प्रतिभागी संख्या	औसत अंक (%)	मानक विचलन
अनुसूचित जाति	75	66%	6.5
अनुसूचित जनजाति	75	61%	7.2

तालिका से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति की छात्राओं का औसत अंक अनुसूचित जनजाति की छात्राओं की तुलना में अधिक है। अनुसूचित जाति समूह ने 66% का औसत प्राप्त किया, जबकि अनुसूचित जनजाति समूह का औसत 61% रहा। मानक विचलन के अनुसार, ST समूह में अंकों का अधिक फैलाव रहा, जो इस समूह में प्रदर्शन में अधिक असमानता को दर्शाता है।

### सांख्यिकीय परीक्षण

दोनों समूहों के औसत में अंतर के महत्व को जाँचने हेतु टी -परीक्षण का उपयोग किया गया।

परीक्षण	टी- मूल्य	डीएफ (स्वतंत्रता की डिग्री)	पी-मूल्य	निर्णय
स्वतंत्र टी -परीक्षण	3.74	148	0.0003	अंतर महत्वपूर्ण है (पी < 0.05)

टी -परीक्षण के परिणामों से ज्ञात होता है कि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के शैक्षणिक प्रदर्शन में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर है। चूँकि पी -मूल्य 0.05 से काफी कम है, इसलिए यह निष्कर्ष निकाला गया कि अनुसूचित जाति की लड़कियाँ उच्च शिक्षा में तुलनात्मक रूप से बेहतर प्रदर्शन कर रही हैं।

### सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव

छात्राओं की पारिवारिक आर्थिक स्थिति, अभिभावकों की शिक्षा और निवास स्थान के आँकड़ों का विश्लेषण भी किया गया।

तालिका 2: सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का सारांश

संकेतक	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
औसत वार्षिक पारिवारिक आय	₹1,80,000	₹1,20,000
शिक्षित अभिभावकों का प्रतिशत	48%	32%
ग्रामीण पृष्ठभूमि से छात्राएँ	60%	78%

तालिका से स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति की छात्राओं का पारिवारिक आय स्तर और माता-पिता की शिक्षा का स्तर अनुसूचित जनजाति की छात्राओं से बेहतर था। अधिकांश अनुसूचित जनजाति की लड़कियाँ ग्रामीण पृष्ठभूमि से आती थीं, जहाँ शिक्षा के साधनों और अवसरों की भारी कमी है। यह सामाजिक-आर्थिक अंतर शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है।

### संस्थागत और पारिवारिक सहयोग

छात्राओं को मिलने वाले शैक्षणिक संसाधनों, छात्रवृत्तियों और पारिवारिक सहयोग का भी तुलनात्मक विश्लेषण किया गया।

तालिका 3: शैक्षणिक एवं पारिवारिक सहायता का तुलनात्मक आंकलन

सहायता का प्रकार	अनुसूचित जाति (प्रतिशत)	अनुसूचित जनजाति (प्रतिशत)
छात्रवृत्ति प्राप्त छात्राएँ	85%	90%
पारिवारिक शैक्षणिक सहयोग	70%	45%

ट्यूशन या कोचिंग प्राप्त करने वाली छात्राएँ	55%	30%
---	-----	-----

यद्यपि छात्रवृत्ति का लाभ दोनों वर्गों में पर्याप्त मात्रा में पहुँच रहा है, परन्तु पारिवारिक सहयोग और निजी कोचिंग सुविधाएँ अनुसूचित जाति की छात्राओं को अधिक मिल रही थीं। ट्यूशन अथवा अतिरिक्त शैक्षणिक सहायता का लाभ उठाने में अनुसूचित जनजाति की छात्राएँ पीछे थीं, जो उनके कम औसत प्रदर्शन का एक कारण हो सकता है।

### साक्षात्कार से प्राप्त प्रमुख निष्कर्ष

छात्राओं से लिए गए अर्ध-संरचित साक्षात्कारों से निम्नलिखित प्रमुख बिंदु सामने आए:

- अनुसूचित जाति की छात्राओं ने विश्वविद्यालय में खुद को अधिक सहज और समर्थ महसूस किया, जबकि अनुसूचित जनजाति की लड़कियों ने सामाजिक अलगाव और कभी-कभी भेदभाव की शिकायत की।
- अनुसूचित जनजाति की छात्राओं ने वित्तीय कठिनाइयों और अभिभावकों द्वारा शिक्षा में सीमित प्रोत्साहन मिलने की समस्याओं को प्रमुख बताया।
- कई अनुसूचित जनजाति की लड़कियों ने बताया कि यात्रा दूरी, छात्रावास की सीमित सुविधाएँ और डिजिटल संसाधनों की कमी भी उनकी पढ़ाई में बाधक बनती हैं।

### समेकित निष्कर्ष

शोध के परिणाम बताते हैं कि अनुसूचित जाति की लड़कियों का शैक्षणिक प्रदर्शन अनुसूचित जनजाति की लड़कियों की तुलना में अधिक अच्छा है। इस स्थिति का मुख्य कारण बेहतर सामाजिक-आर्थिक स्थिति, परिवार से मिलने वाला अधिक समर्थन, तथा अतिरिक्त शैक्षणिक संसाधनों तक पहुँच है। अनुसूचित जनजाति की छात्राओं को उच्च शिक्षा में समान अवसर प्रदान करने के लिए विशेष रूप से वित्तीय सहायता, परामर्श सेवाएँ और डिजिटल सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए। शिक्षण संस्थानों को संवेदनशीलता बढ़ाने और समावेशी वातावरण बनाने के लिए भी प्रयास करने की आवश्यकता है।

### निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा में अनुसूचित जाति की छात्राओं का शैक्षणिक प्रदर्शन अनुसूचित जनजाति की छात्राओं की तुलना में बेहतर है। अनुसूचित जाति की लड़कियाँ सामाजिक-आर्थिक रूप से अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में हैं, उन्हें पारिवारिक सहयोग और शैक्षणिक संसाधनों की अधिक उपलब्धता प्राप्त है, जिससे उनके प्रदर्शन में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। दूसरी ओर, अनुसूचित जनजाति की छात्राएँ आर्थिक कठिनाइयों, सामाजिक अलगाव, तथा संस्थागत सुविधाओं की कमी जैसी चुनौतियों का सामना कर रही हैं, जो उनके शैक्षणिक विकास में बाधा बनती हैं। अनुसूचित जनजाति की छात्राओं को समान अवसर प्रदान करने हेतु वित्तीय सहायता, परामर्श सेवाएँ, डिजिटल संसाधनों की सुविधा और समावेशी शैक्षणिक वातावरण विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार, यदि उपयुक्त हस्तक्षेप किए जाएँ, तो दोनों वर्गों की छात्राएँ समान रूप से उच्च शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकती हैं।

### SECTION TITLE 8

#### संदर्भ

1. लाल, एम. (2016)। एससी और गैर एससी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा और सामान्य बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज, 6(11)।
2. दिलीप कुमार (2021)। भारतीय उच्च शिक्षा में अनुसूचित जाति की पहुंच: मुद्दे और चुनौतियां। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (आईजेसीआरटी)। खंड 9, अंक 9 सितंबर 2021 | आईएसएसएन: 2320-2882
3. एस., शिवशंकरन। (2022)। उच्च शिक्षा में छात्राओं के सामने आने वाली समस्याओं और चुनौतियों पर एक अध्ययन। अंक 4 भारतीय जेल और कानूनी आरएससी, 4, 11
4. महतो, ए., और बर्मन, पी. (2019)। पुरुलिया जिले में एससी, एसटी समुदाय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा और शैक्षणिक प्रदर्शन।

अमेरिकन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 7(11), 872-877.

5. एस.सी., जे.पी., नागर, बी.ए., कॉलोनी, एन.वाई.एस., और धारवाड़, के.आई. (2021)। कर्नाटक की अनुसूचित जातियों में उच्च शिक्षा: सामाजिक-आर्थिक मुद्दे के साथ संबंध। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशनल रिसर्च आईएसएसएन:2277-7881; प्रभाव कारक:7.816(2021); आईसी वैल्यू:5.16; आईएसआई वैल्यू:2.286 पीयर रिव्यूड एंड रेफरीड जर्नल: वॉल्यूम:10, अंक:9(4)
6. साहू, एस. (2016)। भारत में लड़कियों की शिक्षा: स्थिति और चुनौतियाँ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन इकोनॉमिक्स एंड सोशल साइंसेज, 6(7), 130-141।
7. लॉरेंस, ए.एस., और बराथी, सी. (2016)। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में माता-पिता का प्रोत्साहन। ऑनलाइन सबमिशन, 2(6), 1234-1239।
8. नरसिंहमूर्ति (2019) कर्नाटक में एससी/एसटी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर एक अध्ययन। जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च (जेईटीआईआर)। खंड 6, अंक 5
9. आनंद, मिली रॉय और यादव, मोना (2006): शिक्षा में एससी लड़कियों का समावेश: आगे एक लंबा रास्ता। सामाजिक परिवर्तन। खंड 36. संख्या 4. दिसंबर 2006. पृ. 114-130. 20 नवंबर 2019 को पुनःप्राप्त।
10. सुरेश, आर, और मायला रप्पा, बी, सी (2012)। उच्च शिक्षा में ग्रामीण अनुसूचित जाति की छात्राओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति। इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड इंप्रॉवमेंट मैनेजमेंट, 1 (8), 361-367। 12 अक्टूबर 2019 को पुनःप्राप्त।
11. सतपथी, एस. (2016)। ओडिशा में महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा की स्थिति: एक अंतर जिला विश्लेषण। चिकित्सा, 27(25), 157।
12. रामचंद्रप्पा, एस., कुमार, पी. आर., और कुमार, जी. वी. (2015)। एससी/एसटी की उच्च शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) की भूमिका इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज एंड मैनेजमेंट, 2(4), 304-307.